आचारशास्त्र एवं पुराणशास्त्र
(Ethics and mythology)

डॉ. रीना भारती (पीएचडी)
कामेश्वरसिंहदरभंगा-संस्कृतविश्वविद्यालय
दरभंगा,बिहार

भावार्थ :-

आज प्रत्येक स्थान पर मानवीय संबंधो की स्थिति खतरे में प्रतीत होती है | इनमें तब ही सुधार संभव है जब हमें अपने लक्ष्य का स्पष्ट ज्ञान हो | हमारे पारंपरिक पुराणशास्त्रों में मनुष्य का लक्ष्य स्वयं खुश रहकर दूसरों को खुश रहना बताया गया है | यह तब ही संभव है जब हम अपने आचारशास्त्र का सख्ती से अनुपालन करें | आज अधिकांश प्रबंधन संस्थानों में भगवद्गीता में वर्णित आचारसंहिता का अनुपालन किया जाता है | निष्काम कर्मयोग का सिद्धांत हमें निःस्वार्थ भाव से कार्य करने की प्रेरणा देता है एवं अपना महत्वपूर्ण जीवन मानवता की सेवा में समर्पित करने हेतु उत्प्रेरित भी करता है |यह भावना समाज में अपराध दर को जहाँ कम करने में सक्षम है वहीँ यह आदर्श समाज की स्थापना में भी अत्यंत सहयोगी है | आज कई संस्थानों ने आदर्श समाज के दृष्टिकोण को सत्य कर दिखाया है, जिनमें प्रमुख नाम रामकृष्ण मिशन, ईसाई मिशनरियों, टाटा एवं बिरला जैसे अग्रणी व्यवसायियों इत्यादि का है | आज बढ़ते हुए भ्रष्टाचार को रोकने का एकमात्र उपाय आचारशास्त्र में वर्णित उन सिद्धांतों के अनुपालन से है जिनका उल्लेख हमें वेदान्त, मनुशास्त्र, अर्थशास्त्र तथा गांधीवाद आदि जैसे महान ग्रंथों से प्राप्त होता है | अगर, शुरुआत से ही व्यक्ति की अभिप्रेरणा भ्रष्टाचार एवं दुराचार के विरूद्ध सख्त विरोध से स्थापित हो तो समाज का सापेक्ष संचालन अपेक्षाकृत आसान हो जायेगा | अतः आवश्यक है कि मानव मूल्यों को आत्मसात कर जीवन जीने के महत्व को विस्तारपूर्वक प्रसारित करने के व्यावहारिक तरीकों को न सिर्फ प्रचलित किये जाएँ वरन् समय-समय पर इसका मूल्यांकन कर व्यक्ति का मनोबल भी बढ़ाया जाये |

[कुँजी शब्द – आचारशास्त्र,पुराणशास्त्र, नैतिक चेतना, मानव सेवा, अंतिम लक्ष्य, विवेचनात्मक यथार्थवाद]

अध्ययन के उद्देश्य:-

1. पुराणशास्त्रों की महत्ता को वर्तमान सन्दर्भ में दर्शाना |
2. वर्तमान आचारशास्त्र का सन्दर्भ हमारे पुराणशास्त्रों में निहित हैं को उदहराण के माध्यम से स्पष्ट करना |

महत्व एवं विश्लेषण:-

आचारशास्त्र हमें जहाँ उचित और अनुचित का भेद कराती है वहीँ यह हमें अपने अधिकार और कर्तव्य से भी अवगत कराने की जिम्मेदारी का वहन करती है | आज का युग विज्ञान का युग है परन्तु, यह भी उतना ही सत्य है कि यदि मनुष्य सिर्फ वैज्ञानिक ज्ञान के आधार पर आचरण करे तो वह मशीन मात्र बनकर रह जायेगा | यही वजह है कि अनुभववादियों ने जितना महत्व निरन्तर अनुसन्धान को दिया उतना ही नैतिकता के पक्ष को भी अपने अध्ययन में शामिल किया | विज्ञान हमें अविष्कृत चीजें तो दे सकता है ! परन्तु, उसके उचित सदुपयोग का ज्ञान हमें आचारशास्त्र से ही प्राप्त होता है | अतः मनुष्य के लिए आचारशास्त्र का ज्ञान उतना ही महत्वपूर्ण है जितना भौतिक जीवन में मनुष्य के लिए एक छत का होना |

'Ethics' ग्रीक शब्द 'Ethica' से व्युत्पन्न है जिसका अर्थ है रीति, प्रचलन या आदत | इसे नीति-विज्ञान (Science of morality) भी कहा जाता है | 'Morality' शब्द की उत्पति 'mores' से हुई है जिसका शाब्दिक अर्थ जनाचार अथवा प्रचलन है | अतः आचारशास्त्र रीति-रिवाज एवं मनुष्य के अभ्यास-जन्य आचरण से सम्बंधित है जिसके अध्ययन को दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है –

1. मनुष्य का आचरण किस प्रकार निर्धारित होता है ? एवं
2. मनुष्य का आचरण कैसा होना चाहिए ?

जहाँ मनुष्य का आचरण उसके चरित्र पर निर्भर है वहीं आचारशास्त्र हमें आचरण के औचित्य एवं अनौचित्य का ज्ञान करता है | मनुष्य का चरित्र निर्माण उसके आसपास के संपूर्ण वातावरण पर निर्भर होता है तथा यह प्रक्रिया जीवनपर्यन्त चलती रहती है | आचारशास्त्र का

लक्ष्य जीवन के वास्तविक आदर्श एवं मानदंड की मीमांसा करना है जिस कारण इसे आचरण के आदर्श का विज्ञान भी कहा जाता है | आचारशास्त्र के अंतर्गत हम नैतिक मानदंडों, नैतिक पद्धतियों, नैतिक भावना और नैतिक निर्णय सम्बन्धी ज्ञान इत्यादि का अध्ययन करते हैं, जिनसे हमारी नैतिक चेतना का निर्माण होता है | नैतिक चेतना के तीनों पक्षों ज्ञानात्मक, भावात्मक एवं क्रियात्मक आधार पर ही हमारे बुद्धिवाद का निर्माण निर्भर करता है |

आचारशास्त्र का उद्देश्य जहाँ अत्यंत पवित्र है वहीँ इसका निर्धारण करना सदैव एक दुरूह कार्य भी रहा है | नैतिक आदर्श का स्वरुप एवं नैतिक मापदंड निर्धारित करना , कोई कर्म किन परिस्थितियों में उचित अथवा अनुचित है का निर्धारण, कर्तव्यों एवं दायित्वों की परिभाषा एवं व्याख्या, व्यक्ति और समाज के संबंध कैसे हों, दंड के नैतिक पक्ष की सार्थकता अथवा निरर्थकता प्रमाणित करना एवं कुछ विशेष मनोवैज्ञानिक, दार्शनिक. सामाजिक तथा राजनीतिक समस्याओं पर विचार करना आदि सचमुच एक जटिल कार्य है |

बीसवीं शताब्दी के मध्य के भाषाई और सांस्कृतिक बदलावों ने अनेक विषयों में तेजी से अमूर्त दार्शनिक और व्याख्यात्मक सामग्री में वृध्दि की है एवं तथाकथित ज्ञान के सामाजिक अधिग्रहण पर 'उत्तर आधुनिक' दृष्टिकोण को अंकित किया है | सामाजिक विज्ञान के दर्शन द्वारा साहित्य के सिद्धांत के खंडन सम्बन्धी आरोप की उल्लेखनीय आलोचना पीटर विन्च के 'दी आईडिया ऑफ सोशल साइंस एंड इट्स रिलेशन टू फिलोसोफी' (1958) में की गई है | उत्तर आधुनिक कालीन आलोचकों का सामाजिक विज्ञान की व्यापक परियोजना के साथ मेल का प्रयास ही, खासकर ब्रिटेन में विवेचनात्मक यथार्थवाद के विकास का आधार रहा है | रायभास्कर जैसे विवेचनात्मक यथार्थवादियों ने पारंपरिक प्रत्यक्षवाद, विज्ञान को संभव करने वाले सत्तामूलक हालातों में नाकामी की वजह से ही ज्ञान तर्कदोष को को प्रस्तुत किया है | इसी नाकामी ने टालकट पार्सन्स के क्रिया सिद्धांत एवं एन्थोनी गिडेंस के के संरचनात्मक सिद्धांत को भी जन्म दिया | माइकल बुरावाय ने सार्वजनिक समाजशास्त्र की तुलना कठोर आचार- व्यवहार पर जोर देते हुए शैक्षणिक या व्यावसायिक समाजशास्त्र के साथ की है जो व्यापक रूप से अन्य सामाजिक, राजनैतिक और दार्शनिकों के बीच सम्प्रेषण से संबंध रखती है |

आधुनिक प्रबंधन सिद्धांत में भी नीतिशास्त्र के नियमों का तत्परता से पालन किया जाता है | अमेरिकी और यूरोपीय आचारशास्त्र की प्रमुख संहिता जहाँ बाइबिल

को माना जाता है वहीँ भारत में भगवद्गीता का अनुसरण कर्मक्षेत्र में सर्वाधिक प्रचलित है | भगवद्गीता का निष्काम कर्मयोग का सिद्धांत हमें अपने संव्यावसायिक (Professional) कर्तव्यों को मानवीय सेवा के भाव की ओर उन्मुख करता है | मानवीय सेवा भाव की ओर उन्मुख विचारधारा ने प्रतिदिन घटित होने वाली अपराधों की संख्या पर अंकुश लगाने का कार्य भी किया है | गांधीजी ने भी वेदान्त दर्शन को अपने जीवन में उतारने की वकालत की एवं उन्होंने सत्याग्रह एवं अहिंसा जैसे सिद्धांतों को अपने संग्राम के लिए हथियार के रूप में अपना कर यह साबित कर दिया कि विजय हासिल करने के लिए किसी खून खराबे की कोई आवश्यकता नहीं है | जिन्हें बाद में आचार्य बिनोवा भावे, जय प्रकाश नारायण एवं अन्ना हजारे जैसे प्रबुद्धशालियों ने अपनाया और अपना समस्त जीवन मानव मात्र की सेवा में अर्पित कर दिया |

आदर्श सामाजिक सेवा का स्वरुप एवं कल्याणकारी कार्यविधियाँ हम क्रिस्चन मिस्नरीज एवं रामकृष्ण मिशन आदि में देखते आये हैं | जो न सिर्फ आदर्श जीवन का मार्ग प्रशस्त करता है वरन, यह सामाजिक नियंत्रण का मुख्य अभिकरण भी सिद्ध हुआ है | आर्थिक क्षेत्र में बेबर के सिद्धांत 'प्रोटोस्टेंट एथिक्स एंड स्पिरिट ऑफ कैपिटलिज्म' को भी महत्वपूर्ण सफलता मिली है क्योंकि उन्होंने कल्विनवाद नामक धार्मिक संप्रदाय के माध्यम से आर्थिक वृद्धि के सिद्धांत को इस प्रकार जोड़ दिया है कि मनुष्य को यह प्रतीत ही नहीं होता कि वह अपने धर्म से जुड़ा है अथवा आर्थिक क्रियाकलाप से | उनके इस सिद्धांत को क्रांतिकारी कहा जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी | हिन्दू धर्म के चार महत्वपूर्ण आदर्श – धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष भी मनुष्य को अपने जीवन के उद्देश्यों से परिचित कराते हैं | कौटिल्य ने भी अपनी 'अर्थशास्त्र' नामक पुस्तक में प्रथम तीन आदर्शों को सामाजिक एवं राजनीतिक क्रियाओं हेतु जहाँ महत्वपूर्ण माना है वहीँ चौथे अर्थात् मोक्ष को अत्यंत ऊँचे आदर्शों एवं पवित्र जीवन शैली अपनाने वाले कुछ व्यक्तियों की धरोहर माना है |

निष्कर्ष :-

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि आचारशास्त्र के विभिन्न आयामों को आधुनिक वैज्ञानिक जीवन शैली में भी तेजी से अपनाया जा रहा है क्योंकि सिर्फ विज्ञान के द्वारा मानवीय व्यवहार को नियंत्रित नहीं किया जा सकता | प्रत्येक मनुष्य के जीवन का अंतिम लक्ष्य उस आनंद को प्राप्त करना है जो अनंत एवं अविनाशी हो | निश्चय ही ऐसा कोई वैज्ञानिक अविष्कार नहीं हुआ जो अनंत एवं अविनाशी हो | ऐसे में मनुष्य के जीवन की सार्थकता को किस प्रकार निर्धारित किया जा सकता है ? तब ऐसी अवस्था में मनुष्य विवश हो जाता है अध्यात्म और नीतिशास्त्र की बातों को अपनाने के लिए जिसमें उसके जीवन की सार्थकता उसे निहित प्रतीत होती है | सत्य ही है कि बिना आचारशास्त्र के विज्ञान बिना इंजन के उस रेलगाड़ी की तरह है जिसमें नयापन तो है परन्तु, इसे किस ओर जाना है इसकी जानकारी ही नहीं है | फलतः मनुष्य अपने प्रश्नों के उत्तर हेतु आचारशास्त्र को अपनाता है जिससे उसे अपना लक्ष्य एवं गंतव्य हासिल हो जाता है और संभवतः उसे अपने जीवन के वास्तविक उद्देश्य की भी कुँजी प्राप्त हो जाती है |

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :-

1. प्रारंभिक आचार शास्त्र (पाश्चात्य एयर भारतीय), अशोक कुमार वर्मा , डी० लिट्०, मोतीलाल बनारसीदास पब्लिकेशन दिल्ली, संस्करण – 1974 ,पृ० संख्या -2,3 और 51
2. हिन्दू धर्म, एम्० के० गाँधी (1995), ओरिएंट पेपर बैक , पृ० संख्या – 36-37
3. यंग इंडिया, एम्० के० गाँधी 5-3-1925 पृ० संख्या – 31,
4. सत्याग्रह, एम्० के० गाँधी, पृ० संख्या – 347.
5. आर्गेनाईजेशन बिहेवियर स्टीफेन पी० रौबिंस 2004, दिल्ली : पियर्सन एजुकेशन, पृ० संख्या – 338-339.
6. मॉडर्न इंडियन पोलिटिकल थॉट, वी० पी० वर्मा (1993), लक्ष्मी नारायण अग्रवाल आगरा, पृ० संख्या – 343.
7. गाँधी, नेहरु टैगोर, इंडियन कल्चर सीरीज, बुकहाइव, जे० एल० कचरू (1982) पृ० संख्या – 42-43.